GIRLS' HIGH SCHOOL & COLLEGE, PRAYAGRAJ

2020 - 2021

CLASS - XIth A.B.C.D.

SUB.- HINDI LITERATURE

WORKSHEET NO- 05

निर्देश :- अभिभावकों से ये अपेक्षा की जाती है कि वे ये सुनिश्चित करें कि छात्रा दी गई विषयवस्तु का ध्यानपूर्वक अध्ययन करे, तत्पश्चात दिए गए प्रश्नों का निर्देशानुसार उत्तर दे।

नोट :- पाठ्यपुस्तक-(पद्य) ISC काव्य मंजरी
एवरग्रीन पब्लिकेशन्ज़ (इंडिया) लिमिटेड
व्याकरण - आई. एस. सी. हिन्दी व्याकरण मंजूषा

प्रथम पाठ - साखी

कवि - कबीरदास

संकेत :- पाठ्यपुस्तक काव्य मंजरी के प्रथम पाठ में कबीरदास द्वारा रचित दस साखियाँ संकलित है। कबीरदास हिन्दी साहित्य की संत काव्यधारा की ज्ञानाश्रयी निर्गुण शाखा के प्रमुख कवि हैं। कबीरदास निराकार ब्रह्म के उपासक थे। इसलिए इन्होंने मूर्तिपूजा, कर्मकांड, जाति-पाँति तथा वाह्य आडंबरों का विरोध किया है। इनकी साखियों तथा पदों में एक समाज सुधारक का निर्भीक स्वर सुनाई देता है।

पाठ में संकलित साखियों में कबीरदास जी ने सतगुरु की महिमा, प्रभु या गुरु के प्रेम एवं अनुग्रह की कृपा, प्रभु-विरह की व्याकुलता, प्रियतम (प्रभु) से मिलन की तीव्र आकांक्षा, गुरु की कृपा से परम तत्व के दर्शन होने, ईश्वर के ज्ञान से अहं की समाप्ति तथा सच्चे वैराग्य के द्वारा मन को योगी की

भाँति बना लेना जैसे प्रसंगों का उल्लेख किया गया है।

प्रश्न - 1 - अधोलखित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

बासुरि सुख, नाँ रैणि सुख, ना सुख सुपिनै माहिं।
कबीर बिछुट्या राम सूं, ना सुख धूप न छाँह ॥
तन कौं जोगी सब करैं, मन को विरला कोइ।
सब विधि सहजै पाइए, जे मन जोगी होइ ॥

(i) कबीरदास जी हिन्दी की किस शाखा के प्रमुख कवि थे ? इनकी जन्म और मृत्यु किस वर्ष हुई तथा इनके गुरु कौन थे ?

(ii) ईश्वर के विरह में कबीर की क्या स्थिति हो गई है ?

(iii) कबीर के अनुसार 'मन का जोगी' की क्या विशेषताएँ होती हैं ?

(iv) कबीर की भाषा पर टिप्पणी कीजिए।

प्रश्न - 2 - अधोलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

जब मैं था तब हरि नाहिं, अब हरि हैं मैं नाहिं।
सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माहिं ॥
अंखड़ियाँ झाई पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड़्या राम पुकारि-पुकारि ॥

(i) प्रस्तुत दोहे में 'मैं' से क्या तात्पर्य है ? 'मैं' के होने पर तथा 'मैं' के न होने पर क्या-क्या होता है ?

(ii) कौन सी गली कैसी है तथा उसमें कौन-कौन नहीं आ सकता ?

(iii) उपर्युक्त साखी में कबीर ने प्रभु विरह की व्याकुलता का वर्णन किस प्रकार किया है ? समझाइए।

(iv) उपर्युक्त दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि प्रभु की प्राप्ति किस प्रकार सम्भव है ?

प्रश्न - 3 - अधोलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

पीछै लागा जाई था लोक वेद के साथि।
आगै सैं सतगुरु मिल्या, दीपक दीया हाथि॥
कबीरा बादल प्रेम का, हम पर बरष्या आइ।
अंतरि भीगी आतमा हरी भई बनराइ॥

(i) कबीरदास जी इस संसार रूपी भवसागर से किस प्रकार पार होना चाहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

(ii) किसके सम्पर्क में आकर कबीरदास के मन पर छाया सब भ्रम मिट गया ? उपर्युक्त दोहे के आधार पर लिखिए।

(iii) उपर्युक्त दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि किसकी कृपा से कबीरदास जी का वाह्य अंग ही नहीं अपितु अन्तरात्मा तक भीग गई ?

(iv) उपर्युक्त दोहों का केन्द्रीय भाव लिखिए।

प्रश्न - 4 - अधोलिखित पद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए —

मूंवा पीछै जिनि मिलै, कहै कबीरा राम।
पाथर घाटा लौह सब, (तब) पारस कौणें काम॥
जो रोऊँ तो बल घटै, हँसौं तो राम रिसाइ।
मनहि मंहि बिसूरणां ज्यूँ घुंण काठहि खाइ।

(i) उपर्युक्त दोहे के आधार पर कबीर की मनःस्थिति का वर्णन कीजिए?
(ii) प्रथम दो पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।
(iii) कबीदास जी को कौन-सी चिन्ता परेशान कर रही है?
(iv) उपर्युक्त दोहों का केन्द्रीय भाव लिखिए।

प्रश्न :-5 - कबीरदास जी की साखियों के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि कबीर की वाणी सीधे हृदय पर चोट करती है तथा उसमें एक सच्चे समाज - सुधारक की निर्भीकता झलकती है?

प्रश्न - 6 - कबीर की साखियों के आधार पर कबीर की ईश्वर के प्रति विरह - वेदना को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न - 7 - 'साखी' नामक संग्रहित दोहों का भाव अपने शब्दों में लिखिए।

प्रश्न - 8 - 'साखी' शब्द का क्या अर्थ है? कबीर

की संकलित साखियों का प्रतिपाद्य लिखिए।

प्रश्न - 9 - प्रस्तुत दोहों में कबीरदास जी ने क्या सन्देश दिया है ? साहित्य में उनका क्या स्थान है ?

प्रश्न - 10 - ' कबीर की साखियाँ हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि हैं।' - कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए।

— END —